लोक कल्याण सेतु

वर्ष : १२
अंक : १३४
१६ अगस्त से १५ सितम्बर ०८
मूल्य : रु. ३/-

सदस्यता शुल्क :

भारत में : (१) पंचवार्षिक : रु. १००/- (२) आजीवन : रु. ३००/-
विदेशों मे : (१) पंचवार्षिक : US $ 50 (२) आजीवन : US $ 125

कार्यालय **'लोक कल्याण सेतु'**
संत श्री आसारामजी आश्रम,
संत श्री आसारामजी बापू आश्रम मार्ग, अमदावाद-५.
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११.
e-mail : ashramindia@ashram.org web-site : www.ashram.org
Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

स्वामी : अखिल भारतीय श्री योग वेदांत सेवा समिति
प्रकाशक और मुद्रक : निलेश पटेल

प्रकाशन-स्थल : अखिल भारतीय श्री योग वेदांत सेवा समिति,
संत श्री आसारामजी आश्रम, संत श्री आसारामजी बापू आश्रम मार्ग,
मोटेरा, जि. गाँधीनगर (गुज.)। पोस्ट : साबरमती-३८०००५.
मुद्रण-स्थल : विनय प्रिंटिंग प्रेस, मिठाखली, अमदावाद।
सम्पादक : सि.ना. अग्रवाल

'लोक कल्याण सेतु' के सदस्यों से निवेदन है कि कार्यालय के साथ पत्र-व्यवहार करते समय अपना रसीद क्र. और सदस्यता क्र. अवश्य लिखें।

संस्कार	आस्था — दोपहर १२-२० बजे।	श्रद्धा
रोज दोप. २-०० बजे व रात्रि ९-५० बजे।	आस्था इंटरनेशनल भारत में दोप.३-३० से यू.के. में सुबह ११.०० बजे से।	रोज दोपहर १२-४० बजे।

अनुक्रम

- 'प्रभु ! परम प्रकाश की ओर ले चल' ३
- कुप्रचार से हानि संतों को नहीं, समाज को है १०
- संतों का अपमान, नहीं सहेगा हिन्दुस्तान १२
- आसाराम बापू के हक में संतों द्वारा रैलियाँ १२
- ऋतुराज ने टीवी देखकर घटना को अंजाम दिया : पुलिस १३
- बापू के साधक सड़कों पर प्रदर्शन करने नहीं उतरे, आखिर क्यों ? १५
- छिंदवाड़ा गुरुकुल में बच्चों की हत्या की साजिश पहले ही तैयार की गयी थी ? १५
- समिति सेवाकार्य १७
- महापुरुषों का आदर १७
- इलेक्ट्रॉनिक मीडिया टी.आर.पी. बढ़ाने के चक्कर में क्या नहीं करता ! १८
- ...तो मैं आपके ऊपर कोर्ट केस कर दूँगा - अवधेशानंदजी १८

'प्रभु ! परम प्रकाश की ओर ले चल'

तेजपुंज

इस संसार में सज्जनों, सत्पुरुषों और संतों को जितना सहन करना पड़ा है उतना दुष्टों को नहीं। ऐसा मालूम होता है कि इस संसार ने सत्य और सत्त्व को संघर्ष में लाने का मानो ठेका ले रखा है। यदि ऐसा न होता तो गाँधी को गोलियाँ नहीं खानी पड़ती, ईसा मसीह को शूली पर न लटकना पड़ता, दयानन्द को जहर न दिया जाता और लिंकन व केनेडी की हत्या न होती।

इस संसार का कोई विचित्र रवैया, विचित्र रिवाज प्रतीत होता है कि इसका अज्ञान-अंधकार मिटाने के लिए जो अपने-आपको जलाकर प्रकाश देता है, संसार की आँधियाँ उसके उस प्रकाश को बुझाने के लिए दौड़ पड़ती हैं। टीका, टिप्पणी, निंदा, गलत चर्चाएँ और अन्यायी व्यवहार की आँधी चारों ओर से उस पर टूट पड़ती है।

सत्पुरुषों की स्वस्थता ऐसी विलक्षण होती है कि इन सभी बवंडरों (चक्रवातों) का प्रभाव उन पर नहीं पड़ता। जिस प्रकार सच्चे सोने को किसी भी आग की भट्ठी का डर नहीं होता, उसी प्रकार संतजन भी संसार के ऐसे कुव्यवहारों से नहीं डरते। लेकिन उन संतों के प्रशंसकों, स्वजनों, मित्रों, भक्तों और सेवकों को इन अधम व्यवहारों से बहुत दुःख होता है।

महापुरुषों के मन में कदाचित् कोई प्रतिकार पैदा हो तो यही कि : ''हे दुनिया ! तेरी भलाई के लिए हम यहाँ आये थे, किंतु तू हमें पहचान न सकी। यहाँ आने का हमारा कोई दूसरा प्रयोजन नहीं था। हमने तो तेरे कल्याण के लिए ही देह

धारण की और तूने हमारी ही अवहेलना की, अनादर किया ! हमें तुझसे कुछ लेना नहीं था, हम तो तुझे प्रेम से अमृत देने के लिए बैठे थे । तूने उसका अनादर किया और हमारे सामने विष वमन करना शुरू किया । खैर, तेरा रास्ता तुझे मुबारक और हम अपने-आपमें मस्त ।''

अंधकार, जिसका वास्तव में कोई अस्तित्व नहीं होता, अकारण ही प्रकाश की निंदा करता है। मनुष्य की प्रकृति में यह अंधकार अज्ञान और जड़ता के रूप में स्थित है । यह जब अपना जौहर दिखाता है, तब हैरानी-परेशानी पैदा कर देता है । उसे नष्ट करना और परम दिव्यता के प्रकाश की आराधना करना इसीका नाम सावधानी है । मनगढ़ंत अफवाहों एवं कुप्रचार में न बहना इसीका नाम समझदारी है। नासमझी फैलानेवालों के जाल में न फँसना इसीका नाम सावधानी और सजगता है । सभी संत विभिन्न रूप में हमें इस साधना के मार्ग की ओर ले जाते हैं। घाटी का ऊबड़-खाबड़ रास्ता छोड़कर हम परम दिव्यता के प्रकाशित पथ पर अग्रसर बनें ऐसी प्रार्थना के साथ...

गहन अंधकार से प्रभु ! परम प्रकाश की ओर ले चल...

एक बार महात्मा बुद्ध के पास आकर उनके शिष्य सुभद्र ने निवेदन किया : ''प्रभु ! अब हमें यात्रा में न भेजें । अब मैं स्थानिक संघ में रहकर ही भिक्षुओं की सेवा करना चाहता हूँ ।''

बुद्ध : ''क्यों ? क्या तुम्हें यात्रा में कोई कटु अनुभव हुआ ?''

सुभद्र : ''हाँ, यात्रा में मैंने लोगों को आपकी तथा धर्मसंघ की खूब निंदा करते हुए सुना । वे ऐसी-ऐसी टीकाएँ करते हैं कि उसे सुना नहीं जा सकता ।''

बुद्ध : ''क्या इसीलिए तुमने यात्रा में न जाने का निर्णय किया है ?''

सुभद्र : ''निंदा सुनने की अपेक्षा यहाँ बैठे रहना क्या बुरा है ?''

बुद्ध : ''निंदा एक ऐसी ज्वाला है जो जगत के किसी भी महापुरुष को स्पर्श किये बिना नहीं रहती तो उससे बुद्ध भला कैसे छूट सकते हैं ?

जैसे सूर्य का स्वभाव प्रकाश और जल का स्वभाव शीतलता है, वैसे ही संत का स्वभाव करुणा और परहितपरायणता होता है। हमें अपना स्वभाव नहीं छोड़ना चाहिए । शास्त्र कहते हैं कि निंदक जिसकी निंदा करता है, उसके पापों का भी वह भागीदार बन जाता है । अतएव हमें तो मात्र अपने धर्म में ही दृढ़ता रखनी चाहिए ।''

जिन बुद्ध के हृदय में सारे संसार के लिए प्रेम और करुणा का सरोवर छलकता था, उनकी भी निंदा करने में दुष्ट निंदकों ने कुछ बाकी नहीं छोड़ा था। वस्तुतः इस विचित्र संसार ने जगत के प्रत्येक महापुरुष को तीखा-कड़वा अनुभव कराया है ।

दुष्टता की दुनिया

मार्टिन लूथर नामक एक गुरु ने ईसाई धर्म में प्रचलित अनेक बुराइयों और मतभेदों को सुधारने के लिए झंडा उठाया तो पोप और उनके सहयोगियों ने मार्टिन को इतना हैरान करना आरंभ किया कि उनके एक शिष्य ने गुरु से कहा : ''गुरुजी ! अब तो हद हो गयी है। अब आप एक शाप देकर इन सब लोगों को जलाकर खाक कर दीजिये ।''

लूथर : ''ऐसा कैसे हो सकता है ?''

शिष्य : ''आपकी प्रार्थना तो भगवान सुनते हैं । उन्हें प्रार्थना में कह दें कि इन सब पर बिजली गिरे ।''

लूथर : ''वत्स ! यदि मैं भी ऐसा ही विचार करने लगूँ तो मुझमें और उनमें क्या अन्तर रह जायेगा ?''

शिष्य : ''लेकिन इन लोगों का अविवेक, अन्याय और इनकी नासमझी तो देखिये ! क्या

बिगाड़ा है आपने इनका ? आप जैसे सात्त्विक, सज्जन और परोपकारी संत को ये नालायक, दुष्ट और पापीजन...''

शिष्य आगे कुछ और बोले उसके पहले ही लूथर बोल पड़े : ''उसे देखना हमारा काम नहीं है । हमें तो अपने ढंग से असत्य और विकृतियों को उखाड़ फेंकने का काम करना है । शेष सारा काम भगवान को स्वयं देखना है ।''

उसने पुनः विनम्रता से कहा : ''गुरुदेव ! आप अपनी शक्ति आजमाकर ही उन्हें क्यों नहीं बदल देते ? आप तो सर्वसमर्थ हैं ।''

लूथर : ''यदि राग और द्वेष, रोग और दोष अन्तःकरण से न घटे तो गुरुदेव किस प्रकार सहायक बन सकते हैं ? मेरा काम है दुरित (पाप) का विसर्जन कर सत्य और शुभ का नवसर्जन करना । दूसरों को जो करना हो करें । अपना काम तो अपने रास्ते पर दृढ़तापूर्वक चलना है ।''

समझदारी की पगडंडी

सच्चे ज्ञानी महापुरुष इस समझदारी को साथ रखते हुए ही अपने रास्ते पर चलते रहते हैं, किंतु किसी अकल्पनीय कारण से उनके टीकाकार या विरोधी अपना गलत रास्ता नहीं छोड़ते । उन अभागों की मनोदशा ही ऐसी होती है । भर्तृहरि ने कहा है कि 'कुत्ता हड्डी चबाता है तो उसके मसूड़ों में से रक्त निकलता है और उसे ऐसा लगता है मानों उस हड्डी में से निकला हुआ खून उसे स्वाद दे रहा है ।' इसी प्रकार निंदा करनेवाला व्यक्ति भी किसी दूसरे का बुरा करने के प्रयत्न के साथ विकृत मजा लेने का प्रयत्न करता है । इस क्रिया में बोलनेवाले के साथ सुननेवाले का भी सत्यानाश होता है । निंदा एक प्रकार का तेजाब है । वह देनेवाले की तरह लेनेवाले को भी जलाता है ।

ज्ञानी महापुरुष सर्वत्र प्रकाश फैलाता है, शुभ विचार देता है लेकिन हृदय में जो द्वेष लेकर बैठे हैं वे सत्संग के विचार तो नहीं लेते अपितु दूसरों के दिल में भी नफरत पैदा करते हैं । प्रकाश, सुविचार और सात्त्विक जीवन का रास्ता खुद लेते नहीं और दूसरों को भी वहाँ से विचलित कर देते हैं । ऐसी होती है उनकी प्रकृति !

समाज व राष्ट्र में व्याप्त दोषों के मूल को देखा जाय तो सिवाय अज्ञान के उसका अन्य कोई कारण ही नहीं निकलेगा और अज्ञान तब तक बना ही रहता है जब तक कि किसी अनुभवनिष्ठ ज्ञानी महापुरुष का मार्गदर्शन लेकर लोग उसे सच्चाई से आचरण में नहीं उतारते ।

समाज जब ऐसे किसी ज्ञानी संतपुरुष की शरण, सहारा लेने लगता है तब राष्ट्र, धर्म व संस्कृति को नष्ट करने के कुत्सित कार्यों में संलग्न असामाजिक तत्त्वों को अपने षड्यंत्रों का भंडाफोड़ हो जाने का और अपना अस्तित्व खतरे में पड़ने का भय होने लगता है । परिणामस्वरूप अपने कुकर्मों पर पर्दा डालने के लिए वे उस दीये को ही बुझाने के लिए नफरत, निंदा, कुप्रचार तथा असत्य, अमर्यादित व अनर्गल आक्षेपों व टीका-टिप्पणियों की आँधियों को अपने हाथों में लेकर दौड़ पड़ते हैं, जो समाज में व्याप्त अज्ञानांधकार को नष्ट करने के लिए महापुरुषों द्वारा प्रज्वलित हुआ था ।

ये असामाजिक तत्त्व अपने विभिन्न षड्यंत्रों द्वारा संतों-महापुरुषों के भक्तों व सेवकों को भी गुमराह करने की कुचेष्टा करते हैं । समझदार साधक या भक्त तो उनके षड्यंत्रजाल में नहीं फँसते । महापुरुषों के दिव्य जीवन के प्रतिपल से परिचित उनके अनुयायी कभी भटकते नहीं, पथ से विचलित होते नहीं अपितु सश्रद्ध होकर उनके दैवी कार्यों में अत्यधिक सक्रिय व गतिशील होकर सहभागी हो जाते हैं । लेकिन जिन्होंने साधना के पथ पर अभी-अभी कदम रखा है, ऐसे नवपथिकों को गुमराह कर पथच्युत करने में दुष्टजन आंशिक रूप से अवश्य सफलता प्राप्त कर लेते हैं और

इसके साथ ही आरम्भ हो जाता है नैतिक पतन का दौर, जो संतविरोधियों की शांति व पुण्यों को समूल नष्ट कर देता है, कालान्तर में उनका सर्वनाश कर देता है। कहा भी गया है :

संत सतावे तीनों जावे, तेज बल और वंश।
ऐड़ा-ऐड़ा कई गया, रावण कौरव केरो कंस ॥

साथ ही नष्ट होने लगती है समाज व राष्ट्र से मानवता, आस्तिकता, स्वर्गीय सरसता, लोकहित व परदुःखकातरता, सुसंस्कारिता, चारित्रिक सम्पदा तथा **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** की भावना। इससे राष्ट्र नित्य-निरन्तर पतन के गर्त में गिरता जाता है।

यदि हम वर्तमान भारत के नैतिक मूल्यों के पतन का कारण खोजें तो स्पष्टतः पता चलेगा कि वह कारण एक-दूसरे के प्रति झूठे आरोप, उद्दंड व्यक्तियों का संत के प्रति समाज को गुमराह करना, महापुरुषों के उपदिष्ट मार्ग का अनुसरण करने की अपेक्षा इस पुनीत-पावन संस्कृति के हत्यारों के षड्यंत्रों का शिकार होकर असामाजिक, अनैतिक तथा अपवित्रतायुक्त विचारों व लोगों का अंधानुकरण करना यह है।

जिनका जीवन आज भी किसी संत या महापुरुष के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सान्निध्य में है, उनके जीवन में आज भी निश्चिन्तता, निर्विकारिता, निर्भयता, प्रसन्नता, सरलता, समता व दयालुता के दैवी गुण साधारण मानवों की अपेक्षा अधिक ही होते हैं तथा देर-सवेर वे भी महान हो जाते हैं। जिनका जीवन महापुरुषों का, धर्म का सामीप्य व मार्गदर्शन पाने से कतराता है, वे प्रायः अशांत, उद्विग्न व दुःखी होते हुए भटकते रहते हैं, खिन्न होते हैं। इनमें से शास्त्र व संतों से अनभिज्ञ और राग-द्वेष एवं स्वार्थ में उलझे कई व्यक्ति खुद तो गुमराह हैं ही, साथ में औरों को भी गुमराह करने में लग जाते हैं। वे आसुरी वृत्तियों से युक्त होकर संतों के निंदक बनकर अपना सर्वनाश कर लेते हैं।

शास्त्रों में आता है कि संत की निंदा, विरोध या अन्य किसी त्रुटि के बदले में संत क्रोध कर दें, शाप दे दें अथवा कोई दंड दे दें तो इतना अनिष्ट नहीं होता जितना अनिष्ट संतों की खामोशी व सहनशीलता के कारण होता है। सच्चे संतों की बुराई का फल तो भोगना ही पड़ता है। संत तो दयालु और उदार होते हैं। वे तो क्षमा कर देते हैं लेकिन प्रकृति कभी नहीं छोड़ती। इतिहास उठाकर देखें तो पता चलेगा कि सच्चे संतों व महापुरुषों के निंदकों को कैसे-कैसे भीषण कष्टों को सहते हुए बेमौत मरना पड़ा है और पता नहीं किन-किन नरकों में सड़ना पड़ा है। अतएव समझदारी इसीमें है कि हम संतों की प्रशंसा करके या उनके आदर्शों को अपनाकर लाभ न ले सकें तो उनकी निंदा करके या सुनके अपने पुण्य व शांति को तो नष्ट नहीं करें।

पारसमणि

एक भाई ने किन्हीं संत से पूछा : ''संतपुरुष तो पारसमणि के समान माने जाते हैं। फिर वे ऐसे दुष्टजनों को भी क्यों नहीं बदलते ?''

संत : ''जो लोग अपने आस-पास जड़ता की पर्त चढ़ाकर घूमते-फिरते हों उन्हें संतत्व का स्पर्श भला किस प्रकार हो सकता है ? जिस लोहे को पारसमणि स्पर्श ही न कर सकता हो वह भला कंचन किस प्रकार बन सकता है ?''

श्रोता : ''आपकी बात तो सत्य है किंतु दूसरा कुछ न हो सके तो भी संसार के कल्याण के लिए संतों द्वारा दुष्टता हटायी जानी चाहिए।''

संत : ''जो काम स्वयं भगवान अपने हाथ में नहीं लेते उसे सत्पुरुष क्यों लेने लगें ? ईश्वर की ओर से मनुष्य को किस रास्ते जाना है यह अधिकार दिया गया है। सत्पुरुष तो उसे रास्ता बताते हैं, उँगली पकड़कर चलाते हैं, किंतु इससे अधिक आगे जाकर उसे सत्पथ पर घसीटा तो नहीं जा सकता ?''

अर्थहीन पश्चात्ताप

जब सुकरात की मृत्यु हुई, तब उस मृत्यु का कारण बननेवाले एक दुष्ट व्यक्ति को बड़ा पछतावा हुआ । वह सुकरात के एक शिष्य से जाकर बोला :

''मुझे सुकरात से मिलना है ।''

''क्या अब भी तुम्हें उनका पीछा नहीं छोड़ना है ?''

''नहीं भाई, ऐसा नहीं है । मुझे बहुत पछतावा हो रहा है । मुझे ऐसा लग रहा है कि मैंने उन महापुरुष के प्रति भयंकर अन्याय किया है । मुझे उनसे क्षमा माँगनी है ।''

''अरे मूर्ख व्यक्ति ! यह तो अब असंभव है । पुल के नीचे से बहुत पानी बह गया है ।''

स्वयं सुकरात ने एक स्थान पर कहा है :

''अंतिम समय में, मृत्युवेला में मनुष्य सत्य को पहचान ले यह संभव है, किंतु उस समय बहुत विलम्ब हो चुका होता है ।''

सत्यानाश कर डालने के बाद पश्चात्ताप करने का कोई अर्थ ही नहीं । इन्सान भी बड़ा ही अजीब किस्म का व्यापारी है । जब चीज हाथ से निकल जाती है तब वह उसकी कीमत पहचानता है । जब महापुरुष शरीर छोड़कर चले जाते हैं तब उनकी महानता का पता लगने पर वह पछताते हुए रोते रह जाता है और उनके चित्रों को दीवार पर सजाता है । लेकिन उनके जीवित सान्निध्य में कभी अपना दिल दिया होता तो बात ही कुछ और होती । **अब पछताये होत क्या... जब संत गये निजधाम ।**

अंधकार की छाया

स्वामी विवेकानंदजी की तेजस्वी और अद्वितीय प्रतिभा के कारण कुछ लोग ईर्ष्या से जलने लगे । कुछ दुष्टों ने उनके कमरे में एक वेश्या को भेजा । श्री रामकृष्ण परमहंस को भी बदनाम करने के लिए ऐसा ही घृणित प्रयोग किया गया किंतु उन वेश्याओं ने तुरन्त ही बाहर निकलकर दुष्टों की बुरी तरह खबर ली और वे दोनों संत विकास के पथ पर आगे बढ़े । शिर्डीवाले साँईंबाबा, जिन्हें आज भी लाखों लोग नवाजते हैं, उनके हयातिकाल में उन पर भी दुष्टों ने कम जुल्म न किये । उन्हें भी अनेकानेक षड्यंत्रों का शिकार बनाया गया लेकिन वे निर्दोष संत निश्चिंत ही रहे ।

पैठण के एकनाथजी महाराज पर भी दुनियावालों ने बहुत आरोप-प्रत्यारोप लगाये लेकिन उनकी विलक्षण मानसिकता को तनिक भी आघात न पहुँचा अपितु प्रभुभक्ति में मस्त रहनेवाले इन संत ने हँसते-खेलते सब कुछ सह लिया । संत तुकाराम महाराज को तो बाल मुंडन करवाकर गधे पर उलटा बिठाकर जूते और चप्पल का हार पहनाकर पूरे गाँव में घुमाया, बेइज्जती की तथा न कहने योग्य कार्य किया । ऋषि दयानंदजी के ओज-तेज को न सह सकनेवालों ने बाईस बार उनको जहर देने का वीभत्स कृत्य किया और अन्ततः वे नराधम इस घोर पापकर्म में सफल तो हुए लेकिन वे अभागे अपनी सातों पीढ़ियों को नरकगामी बनाकर पचनेवाले हुए ।

हरि गुरु निंदक दादुर होई ।
जन्म सहस्र पाव तन सोई ॥

ऐसे दुर्जनों को हजारों जन्म मेढक की योनि में लेने पड़ते हैं । ऋषि दयानंदजी का तो आज भी आदर के साथ स्मरण किया जाता है लेकिन संतजनों के वे हत्यारे व पापी निंदक किन-किन नरकों की पीड़ा सह रहे होंगे यह तो ईश्वर ही जाने ।

समाज को गुमराह करनेवाले संतद्रोही लोग संतों का ओज, प्रभाव, यश देखकर अकारण जलते-पचते रहते हैं क्योंकि उनका स्वभाव ही ऐसा है । जिन्होंने संतों को सुधारने का ठेका ले रखा है उनके जीवन की गहराई में देखोगे तो कितनी दुष्टता भरी हुई है ! अन्यथा सुकरात, जीसस, ज्ञानेश्वर महाराज, रामकृष्ण परमहंस, रमण महर्षि,

गुरु नानकदेव और कबीरजी जैसे संतों को कलंकित करने का पाप ही वे क्यों मोल लेते ? ऐसे लोग उस समय में ही थे ऐसी बात नहीं, अपितु आज भी मिला करेंगे ।

कदाचित् इसीलिए विवेकानंदजी ने कहा था : ''जो अंधकार से टकराता है वह खुद तो टकराता ही रहता है, अपने साथ वह दूसरों को भी अँधेरे कुएँ में धकेलने का प्रयत्न करता है । उसमें जो जागता है वह बच जाता है, दूसरे सभी गड्ढे में गिर पड़ते हैं ।''

चेतना का हनन

मार्टिन ब्युबर नाम के एक संत से उनके एक स्वजन ने कहा : ''आप यह जो समाज में प्रचलित अज्ञान का विरोध कर रहे हैं, उससे आपके अनेकों दुश्मन बन गये हैं ।''

ब्युबर : ''मैं आनंद, शांति और प्रेम की उस भूमिका पर हूँ जहाँ कोई भी व्यक्ति मेरा दुश्मन नहीं बन सकता । तुम उनको समझाओ कि वे अपने-आपको ही नुकसान पहुँचा रहे हैं ।''

स्वजन : ''उन संतनिंदकों से किसी भी प्रकार की दलील करना बेकार है ।''

ब्युबर ने कहा : ''आकाश और पाताल के प्राकृतिक रहस्य भले ही न जाने जा सकें किंतु मनुष्य को अपने-आपको तो सच्चे स्वरूप में जान ही लेना चाहिए । आत्म-स्वरूप के परिचय के अलावा सभी कार्य जीवन-हनन हैं । हम उन लोगों की तरह मूर्खता कर अपने जीवन का ह्रास क्यों करें ?''

मुझे समाज के उत्थान में रुचि है

नोबल पुरस्कार-विजेता और विश्वविख्यात साहित्यकार रवीन्द्रनाथ टैगोर ने जिस समय शांति-निकेतन की स्थापना की उस समय बंगाल के कुछ जमींदारों ने यह कहना आरंभ किया कि यह तो एक नया तमाशा है । इन बातों पर जब गुरुदेव से स्पष्ट करने को कहा गया तब उन्होंने कहा :

''मुझे समाज के उत्थान में रुचि है । उसके लिए मैंने व्यक्ति के उत्थान का रास्ता पसंद किया है । सबके जीवन में **सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम्** की प्रतिष्ठा के लिए ही मेरा प्रयत्न चल रहा है । यदि उसे कोई समझना न चाहे तो मुझे क्या ? खामख्वाह बकवास फैलाये तो मुझे क्या ?''

दिव्यता की चाह

दक्षिण के विख्यात संत तिरुवल्लुवर के एक प्रधान शिष्य ने उनसे दूर हटकर उनके सम्बन्ध में ही उलटी-सीधी बातें करनी शुरू कर दीं । इस पर एक शिष्य ने संत से कहा : ''उसे आप यहीं बुलवाकर सबके सामने फटकारिये ।''

संत ने कहा : ''राम... राम ! यह मुझसे कैसे होगा ? उसका हृदय तो उसे अंदर से ही फटकारता होगा कि वह जो कुछ कर रहा है वह अनुचित है । जिद्दी लोग एक बार कुछ पकड़ लेते हैं तो वे फिर उसे छोड़ नहीं सकते । ईर्ष्यालु आदमी एक बार निंदाखोरी पकड़ लेता है, फिर उसकी आदत बन जाती है । आदत छोड़ना मुश्किल है ।''

शिष्य : ''एक समय का प्रेम किस प्रकार वैर में बदल गया है ? उसकी श्रद्धा कैसे घृणा में परिवर्तित हो गयी है ?''

संत तिरुवल्लुवर ने कहा : ''मित्र का मार्ग भले ही बदल जाय किंतु हमें मित्रता नहीं बदलनी चाहिए । यदि यह सत्य सभी लोग समझ लें तो संसार की आज जो दयनीय स्थिति है, क्या वह रह सकती है ?''

आदत के गुलाम

एक सज्जन ने पूछा : ''गाँधीजी के बारे में उनके आश्रमवासी प्यारेलाल ने जो लिखा है, क्या आप उसे जानते हैं ?''

दूसरा : ''हाँ, मैं उसे जानता हूँ ।''

पहला : ''क्या यह सब सत्य होगा ?''

दूसरा : ''हमें उस पर विचार करने की आवश्यकता ही क्या है ? जिसे अभद्रता पसन्द है वह चन्द्रमा में भी कलंक देखेगा । वह चन्द्र की शीतल चाँदनी का लाभ लेने के बदले दूसरी-तीसरी बातें करेगा । क्या यह ठीक माना जायेगा ?

मैंने अनेक अनुभवों के बाद यह निश्चय किया है कि जिस बरसात से फसल न पैदा हो, वह बरसात नहीं झींसी है । इस संसार में ऐसे अनेक मनुष्य हैं जो अपनी अलभ्य चैतन्य शक्ति को इधर-उधर नष्ट कर देते हैं । ऐसे लोग अमृत को भी विष बनाकर ही पेश करते हैं ।''

भूल का मूल

स्वामी रामतीर्थ के शिष्य सरदार पूरणसिंह ने प्रथम परिचय में ही संन्यास ग्रहण कर लिया । इसके बाद उन्होंने विवाह किया । लोग इस सम्बन्ध में रामतीर्थ से शिकायत करने लगे ।

स्वामीजी ने कहा : ''वह मेरे बुलावे से मेरे पास नहीं आया था । फिर भी आ गया और उसने मुझसे प्रार्थना की तो मैंने उसे ज्ञान दिया । वह अपने-आप संन्यासी बना । अब वह यदि अपना रास्ता बदल दे तो मुझे क्या परेशानी है ? चरवाहा बनकर मैं कितने भेड़-बकरियों की रखवाली करता रहूँगा ?''

''एक व्यक्ति की भूल के लिए यदि दूसरे व्यक्ति को कष्ट सहना पड़ता हो तो उसके लिए कोई उपाय तो करना ही चाहिए ।''

''यह तो तुमको सोचना है कि किसने क्या भूल की । अपने राम को यह झंझट पसन्द नहीं है । मैं तो अपने-आपमें लीन हूँ, मस्त हूँ । दूसरे लोग अपनी सँभालें ।''

आचार धर्म की लगन

साबो नामक एक जापानी झेन साधु थे । उनकी निंदा इतनी बढ़ गयी कि उनके शिष्य परेशान हो गये । एक खास शिष्य ने उनसे कहा : ''गुरुजी ! हम लोगों को यह नासमझ गाँव छोड़कर चले जाना चाहिए ।''

गुरु : ''ऐसा करने का क्या कारण है ?''

शिष्य : ''मुझे आपकी निंदा पसन्द नहीं आती। यहाँ के लोग क्या-क्या असत्य फैलाते हैं ! हमें यह समझ में नहीं आता कि क्या करें ?''

गुरु : ''निंदकों का काम है निंदा करना तथा अपने पुण्यों और आंतरिक शांति का विनाश करना । संत का निंदक तो महा-हत्यारा होता है तथा मरकर सदियों तक कीट-पतंग और मेढक की म्लेच्छ योनियों में ही सड़ता रहता है । दुष्ट तो सज्जनों की कल्पित अफवाहें उड़ाते ही हैं । तुम अपने सत्य के आचार धर्म में इतने तटस्थ रहो कि शेष सब तुच्छ प्रतीत होने लगें ।''

यह बात सत्य है । प्रकाश की पूजा में इतनी तन्मयता होनी चाहिए कि अंधकार की ओर ध्यान देने का अवकाश ही न मिले ।

सत्य के शोधक

महात्मा बुद्ध की शिष्य-परम्परा में बोधिधर्म का नाम अधिक प्रसिद्ध है । उस समय तिब्बत, चीन और जापान में हिंसा और अज्ञान का ताण्डव चल रहा था । उन्होंने वहाँ जाकर प्रेम, शांति और करुणा का संदेश दिया । उन्होंने अपने एक शिष्य को मंगोलिया भेजने का निश्चय किया ।

शिष्य बोला : ''क्या काल-ज्वाल मंगोल लोग मुझे जान से मारे बिना छोड़ेंगे ? उनके पास जाना एक बड़ा साहस है ।''

बोधिधर्म : ''जिसे सत्य का पता लगाना हो, उसे ऐसा साहस करने से डरना नहीं चाहिए ।''

शब्दों का यह पाथेय लेकर वह शिष्य मंगोलिया चला गया । उसने हिंसावतार सरीखी मंगोलियन जनता में तथागत का संदेश फहराया । उसने खूब कष्ट सहन कर असंख्य लोगों को सच्चे जीवन का संदेश दिया ।

बड़े धनभागी हैं वे सत्शिष्य जो तितिक्षाओं को सहने के बाद भी अपने सद्गुरु के ज्ञान और भारतीय संस्कृति के दिव्य कणों को दूर-दूर तक फैलाकर मानव-मन पर व्याप्त अंधकार को नष्ट करते रहते हैं। ऐसे सत्शिष्यों को शास्त्रों में पृथ्वी पर के देव कहा जाता है।

काँटें बोनेवाले

हजरत मुहम्मद को एक बार ऐसा पता लगा कि उनके पास आनेवाले एक व्यक्ति को निंदा करने की बड़ी आदत है। उन्होंने उस व्यक्ति को अपने पास बुलाकर नरम पँखों से बनाये गये एक तकिये को देते हुए कहा : 'ये पँख तुम घर-घर में फेंक आओ।' उस व्यक्ति को कुछ पता न चला कि यह सब क्या हो रहा है। वह बड़े उत्साह से चल पड़ा। उसने प्रत्येक घर में एक-एक पँख रखते हुए किसी-न-किसी की निंदा भी की।

दूसरे दिन शाम को पैगम्बर ने उसे पास बुलाकर कहा : ''अब तू पुनः जा और सारे पँखों को वापस ले आ।''

व्यक्ति : ''यह अब कैसे हो सकेगा ? सारे पँख न जाने कहाँ उड़कर चले गये होंगे ?''

पैगम्बर : ''इसी प्रकार तू जो जगह-जगह जाकर गैर जिम्मेदार बातें करता है, वे भी वापस नहीं आ सकतीं। वे भी इधर-उधर उड़ जाती हैं। उनसे तुझे कुछ मिलता नहीं बल्कि तेरी जीवनशक्ति का ही ह्रास होता है और सुननेवालों की भी तबाही होती है।''

संत तुलसीदासजी ने कितना स्पष्ट लिखा है :

हरि हर निंदा सुनइ जो काना
होइ पाप गोघात समाना।
हरि गुरु निंदक दादुर होई
जन्म सहस्र पाव तन सोई ॥

(आश्रम से प्रकाशित 'प्रभु ! परम प्रकाश की ओर ले चल' पुस्तक से) ❒

कुप्रचार से हानि संतों को नहीं, समाज को है

किसी व्यक्ति ने एक महात्मा के पास जाकर कहा : ''बाबाजी ! सनातन धर्म के प्रति कुप्रचार करनेवाले लोग कहते हैं कि 'रामायण सच्ची नहीं है।' वे लोग अपना उल्लू सीधा करते हैं यह तो हम जानते हैं लेकिन बाबाजी ! जब हम बार-बार सुनते हैं तो कभी-कभी लगता है कि यह बात सच्ची है क्या ?''

वे एक सुलझे हुए महात्मा थे। बोले : ''मैं यह तो नहीं जानता कि 'रामायण' सही है या गलत लेकिन इससे मेरा जीवन सही हो गया है और जो इसका अध्ययन करता है उसका जीवन भी सही होता है। यही प्रमाण सच्चा है। 'रामायण' के अनुकरण से मेरे कुटुंब में स्नेह बढ़ गया है, भाई-भाई में, पति-पत्नी में, पिता-पुत्र में मर्यादा और स्नेह बढ़ गया है और जरा-जरा-सी बात में जो असमंजस होता था, कुटुंब में कलह होता था वह सब शांत हो गया है। एक-दूसरे को समझने की सूझ-बूझ बढ़ी, एक-दूसरे के काम आने की कला बढ़ी, सच्चाई बढ़ी, सद्भाव बढ़ा है। अभी हमारे कुटुंब में सरसता है। संसार स्वप्नवत् लग रहा है और उसको देखनेवाला आत्माराम अपना लग रहा है। आत्मा अपना है ऐसा ज्ञान-प्रकाश बढ़ रहा है। इससे बड़ा सौभाग्य क्या हो सकता है ? 'रामायण' से हमलोगों का जीवन सही हो गया और जिनको भी अपना जीवन सही करना हो वे 'रामायण' का पाठ करें और सुनें। मैं तो फिर से कहता हूँ, 'रामायण' सही है या नहीं इस कुतर्कपूर्ण विवाद में न पड़कर 'रामायण' का फायदा लेकर अपने जीवन को सही कर लें। 'रामायण' के विषय में 'वह सही है या गलत' यह सोचना ही बेवकूफी है।''

अगर दोषदृष्टि से ही देखना हो तो पापी को भगवान श्रीकृष्ण में भी दुर्गुण दिख जायेंगे, भगवान राम में भी दोष दिख जायेंगे और संत-महापुरुषों में भी दोष दिख जायेंगे निगुरों को। अगर निंदा ही करनी हो तो कोई भी निमित्त उत्पन्न करके निंदक आरोप लगाने लगेंगे ।

प्रसिद्ध कवि गेटे एक सज्जन व्यक्ति थे । उनकी एक पुस्तक सज्जनों को तो बहुत अच्छी लगी किंतु जरूरी नहीं है कि अच्छी बात सभीको अच्छी लगे । कुछ निंदकों ने कवि गेटे पर ऐसे-ऐसे आरोप लगाने शुरू किये, जिसे सुनकर गेटे के प्रशंसकों को आघात लगा कि 'इतने महान कवि के लिए यह क्या अनर्गल बोला जा रहा है ?' अतः कुछ सज्जन लोग मिलकर प्रसिद्ध कवि गेटे के पास आये और बोले : ''आपकी पुस्तक बहुत ही बढ़िया है फिर भी निंदकों ने उसकी धज्जियाँ उड़ायी हैं । उनकी नीच वृत्ति आपके श्रेष्ठ कार्य को नहीं देख सकती । अतः अगर आप संकेत करें तो हम उनके आरोपों का मुँहतोड़ जवाब दे देवें ।''

गेटे ने कहा : ''जिन लोगों को मेरे प्रति प्रेम है और जो मेरे स्वभाव को जानते-मानते हैं, वे लोग यदि ऐसे कुप्रचार करनेवाले हजार लोग और भी बढ़ जायें तब भी विचलित होनेवाले नहीं हैं। जिसने मुझे नजदीक से देखा है उसकी मेरे प्रति श्रद्धा कितना भी कुप्रचार होने पर भी कम नहीं होगी। वह कुप्रचार का शिकार नहीं बनेगा। बैठो, मैं आप लोगों को एक कविता सुनाता हूँ।''

कवि गेटे ने उनको टॉलस्टॉय की एक कविता सुनायी, जिसका आशय था : 'जब कोई तुम्हारी कड़ी आलोचना करता है तब तुम्हें यह स्मरण रखना चाहिए कि तुम्हारा फूल सुविकसित है इसीलिए भौंरे डंक मारने आ रहे हैं। इसी प्रकार जब तुम्हें निंदकों के डंक लगने लगें तो समझ लेना कि तुम्हारा कार्य सुविकसित हुआ है । अर्धविकसित फूल पर भ्रमर कहाँ बैठता है ?'

इसलिए जब आलोचक अनाप-शनाप आलोचना करने लगें तब तुम्हें संतोष मानना चाहिए कि तुम्हारा पुरुषार्थ और सेवाकार्यरूपी पुष्प इतना सुविकसित हुआ है कि उन बेचारों को तकलीफ हो रही है, हालाँकि तुम्हारा इरादा उन्हें तकलीफ देने का नहीं है ।

लेकिन हाँ, तुम सावधान जरूर रहना। अपने श्रद्धास्थानों के प्रति, संस्कृति के प्रति झूठी अफवाहें, कुप्रचार से दबकर बैठे मत रहना; सुप्रचार के द्वारा उनका निराकरण करते रहना, समाज में सजगता लाते रहना। श्रद्धाहीन व्यक्तियों के चक्कर में आकर अपनी श्रद्धा को कभी ढीला मत करना, सत्संग मत छोड़ना, ध्यान-भजन, जप-स्वाध्याय आदि का त्याग मत करना। जैसे दमा, टी.बी. आदि से ग्रस्त मरीज की हम सेवा तो करते हैं लेकिन उसके कीटाणु हमें न लगें इस बात की सावधानी भी रखते हैं। ऐसे ही जो अश्रद्धा के कीटाणु से ग्रस्त हो रहे हों, ऐसे लोगों से बचकर रहना । यदि ऐसे लोगों के बीच रहे, उनकी 'हाँ' में 'हाँ' मिलाते रहे तो फिर तुम्हारी श्रद्धा पर भी आँच आने लगेगी और ध्यान-भजन में रुचि कम होती जायेगी ।

उन व्यक्तियों से, उन वस्तुओं से, उन परिस्थितियों से, उन बातों से और संसर्ग से बचो जो तुम्हारी श्रद्धा, भक्ति और प्रेमरस को सुखाते हों । उन्हीं व्यक्तियों, वस्तुओं और परिस्थितियों का अवलंबन लो जिनसे तुम्हारे हृदय में श्रद्धा, भक्ति और प्रेम का स्रोत प्रकट होने में मदद मिले । भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं : **श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं...** श्रद्धालु ही उस परम ज्ञान को पाता है और ज्ञान से परम शांति का अनुभव यहीं कर लेता है । ❐

संतों का अपमान, नहीं सहेगा हिन्दुस्तान

भारत जागृति मोर्चा तथा संतों ने की बापू के हक में महासभा

मुंबई (प्रेस की ताकत) : मुंबई के आजाद मैदान में भारत जागृति मोर्चा की ओर से एक विशाल हिन्दू महासभा का आयोजन किया गया, जिसमें भारत के विभिन्न प्रांतों से देश के प्रमुख संतों ने आकर इस महासभा को जहाँ सम्बोधित किया, वहीं विभिन्न राजनेताओं ने भी इस महासभा को सम्बोधित करके इस बात पर बारम्बार जोर दिया कि बापू एक धार्मिक गुरु हैं, उन्हें तंत्रविद्या से कोई मतलब ही नहीं है। इस महासभा में जहाँ संतों ने संत आसारामजी बापू पर हो रहे झूठे आरोपों का खंडन कर दिया और घोषणा की कि 'बापू पर झूठे आरोप लगाकर देश के करोड़ों लोगों को मूर्ख बनानेवालों को अब सावधान होना होगा। देश के संतों का अपमान, नहीं सहेगा हिन्दुस्तान।' वहीं साधुसमाज के रामानुजाचार्य विश्वेश प्रपन्नाचार्य सरस्वतीजी ने बापू के प्रति अपनी संवेदना प्रकट करते हुए कहा कि 'हिन्दू धर्म ही विश्व-धर्म है जिसकी संत रक्षा करते हैं। देखो, संतों की रक्षा के लिए इस महासभा को देखकर लगता है कि भारत जागृत हो गया है। कभी नरेन्द्र महाराज, कभी शंकराचार्य, कभी राम मंदिर, कभी अमरनाथ मंदिर तो कभी आसारामजी बापू को मुद्दा बनाकर विदेशी ताकतें हिन्दुस्तान को खंड-खंड करने का सपना देख रही हैं, जिसे भारत का साधुसमाज हरगिज सहन नहीं करेगा।

ऐसा पहली बार हुआ है जब एक दिन के लिए आयोजित हिन्दू महासभा को एक दिन और भी बढ़ाना पड़ा हो। ❐

आसाराम बापू के हक में संतों द्वारा रैलियाँ

अमदावाद (प्रेस की ताकत) : संत आसारामजी के अमदावाद गुरुकुल के दो बच्चों की मृत्यु और फिर छिंदवाड़ा में एक के बाद एक बच्चे की मौत और सारे आरोप संत आसाराम बापू पर लगने से भारत भर में संतों के मन आहत हुए। कभी जयेन्द्र सरस्वती, कभी रामदेवजी, कभी अमरनाथ तो कभी संतों पर स्टिंग ऑपरेशन... सभी निराधार ! आखिर अब आसाराम बापू !

आखिर कौन होता है इन सबके पीछे ? कौन करता है यह घिनौना खेल ? क्यों होते हैं प्रहार उन संतों पर, जो धर्म को ऊँचा उठा हुआ देखना चाहते हैं ? इसमें चाहे ईसाई मिशनरियाँ हों, चाहे विदेशी ताकतें हों या हों असामाजिक तत्त्व, पर जब भारत के संत जाग पड़ते हैं तो देश में नहीं, विदेश में नहीं, पूरे ब्रह्माण्ड में हाहाकार मच जाता है।

आसारामजी बापू पर थोपे जा रहे आरोपों के विरुद्ध संत इकट्ठे होने आरम्भ हो गये हैं। क्या मुंबई, क्या हरिद्वार संत-समुदाय आसारामजी बापू के हक में रैलियाँ निकाल रहे हैं। संतों का कहना है कि भारतीय संस्कृति पर प्रहार करनेवालो ! संतों पर राजनीति, छींटाकशी हम कभी भी बर्दाश्त नहीं करेंगे। ❐

ऋतुराज ने टीवी देखकर घटना को अंजाम दिया : पुलिस

छिंदवाड़ा (प्रेस की ताकत) : अमदावाद में हुई दो बच्चों की मृत्यु के बाद गुरुकुल बंद हो जाने की खबर को टीवी पर देखकर १४ वर्षीय ऋतुराज ने छिंदवाड़ा में दो बच्चों- रामकृष्ण तथा वेदांत की हत्या को अंजाम दिया - यह कहना है छिंदवाड़ा पुलिस का।

छिंदवाड़ा पुलिस का कहना है कि ऋतुराज का मन आश्रम के गुरुकुल में नहीं लग रहा था। आश्रम के अनुसार ध्यान, प्राणायाम, पढ़ाई, सात्त्विक खाना उसे अच्छा नहीं लग रहा था। वह आश्रम से भाग जाना चाहता था परंतु उसे कोई तरीका नहीं सूझ रहा था। ऋतुराज किसी भी तरीके से आश्रम के इस गुरुकुल से छुटकारा पाना चाहता था। उसका छिंदवाड़ा के इस गुरुकुल में प्रवेश भी ३ जुलाई को अमदावाद के प्रकरण के एक सप्ताह बाद १० जुलाई २००८ को हुआ था।

पुलिस का यह मानना है कि ऋतुराज की जब आश्रम के गुरुकुल से बाहर जाने की कोई जुगत न लड़ी तो उसके मन में आया कि अमदावाद के दो बच्चों की मृत्यु के बाद गुरुकुल बंद कर दिया गया था। यहाँ भी इस तरीके से गुरुकुल बंद करवाया जाय। यही सोचकर उसने २९ जुलाई २००८ को ४ वर्षीय रामकृष्ण को मार दिया। (१० को गुरुकुल में प्रवेश लिया और उसके मात्र १९ दिन बाद घटना को अंजाम दिया।) प्रारंभ में यह घटना इस प्रकार लग रही थी कि उसकी मृत्यु आकस्मिक हो। पुलिस सूत्रों के अनुसार ऋतुराज ने पुलिस को बताया कि फिर जब गुरुकुल बंद नहीं हुआ तो उसने ३१ जुलाई २००८ को दूसरे बच्चे वेदांत की मौत को अंजाम दिया।

यहाँ पर यह बात विशेष वर्णन योग्य है कि इस प्रकार की घटना पहली बार नहीं हुई - छः वर्ष पूर्व भी मध्यप्रदेश के शिवपुरी से ३५ कि.मी. की दूरी पर स्थित आरोग गाँव की एक घटित घटना है : आजकल खुलेआम दिखायी जानेवाली टीवी फिल्मों से प्रेरणा पाकर १६ वर्षीय मनोज और १३ वर्षीय रामनिवास ने अपने मालिक के पुत्र शानु का अपहरण करके उसके पिता से धन की माँग की और शानु की हत्या कर दी। १७ जनवरी २००२ को शानु का मृत शरीर मिला। दोनों किशोरों ने पुलिस को आत्मसमर्पण किया और अपराध कबूल किया। उन्होंने यह स्वीकार किया कि यह प्रेरणा उन्हें फिल्म देखकर मिली थी।

ऐसी ही एक और घटना २२ अप्रैल १९९९ को आगरा (उ.प्र.) से प्रकाशित समाचार पत्र 'दैनिक जागरण' में प्रकाशित हुई थी, जो कि वॉशिंगटन (अमेरिका) में घटी थी। इस घटना में किशोर उम्र के दो स्कूली विद्यार्थियों ने डेनवर (कॉलरडो) में दोपहर को भोजन की छुट्टी के समय में कोलंबाइन हाईस्कूल के पुस्तकालय में घुसकर अंधाधुंध गोलीबारी की, जिससे कम-से-कम १५ विद्यार्थियों की मृत्यु हुई, २० घायल हुए। विद्यार्थियों की हत्या के बाद गोलीबारी करनेवाले किशोरों ने स्वयं को भी गोलियाँ मारकर मौत के घाट उतार दिया। हॉलीवुड के मारामारीवाले फिल्मी ढंग से हुए इस अभूतपूर्व कांड के पीछे भी चलचित्र (फिल्म) ही मूल प्रेरक तत्त्व हैं, यह बहुत ही शर्मनाक बात है। भारतवासियों को ऐसे 'सुधरे' हुए राष्ट्र और आधुनिक कहलाये जानेवाले लोगों से सावधान रहना चाहिए।

सिनेमा-टीवी का दुरुपयोग बच्चों के लिए

अभिशापरूप है । चोरी, शराब, भ्रष्टाचार, हिंसा, बलात्कार, निर्लज्जता जैसे कुसंस्कारों से बाल-मस्तिष्क को बचाना चाहिए । छोटे बच्चों की आँखों की रक्षा करना जरूरी है । इसलिए टीवी के विविध चैनलों का उपयोग ज्ञानवर्धक कार्यक्रमों तथा प्राकृतिक सौंदर्य दिखानेवाले कार्यक्रमों तक ही मर्यादित करना चाहिए ।

प्रसिद्ध विद्वान डॉ. कीनो फेरियानी ने लिखा है कि 'निरंतर २० वर्ष तक मैंने अपराध, मनोविज्ञान तथा बाल मनोविज्ञान का अध्ययन किया है और हजारों बार मुझे इस कष्ट भरे सत्य को स्वीकार करने के लिए मजबूर होना पड़ा है कि ८०% बच्चों को अपराधी मनोवृत्तिवाला बनने से बचाया जा सकता था यदि उनके माँ-बाप समय रहते उन्हें अच्छी शिक्षा, ज्ञान, ऊँची विचारधारा से परिचय करवाकर उन्हें वीरता, देशभक्ति, मानव-कल्याण का पाठ पढ़ाते । इस प्रकार उनके जीवन का समूचा रूप बदल सकता था ।'

एक सर्वेक्षण के अनुसार तीन वर्ष का बच्चा जब टीवी देखना शुरू करता है और उस घर में केबल कनेक्शन पर यदि सिर्फ १२-१३ चैनल ही आते हों तो हररोज पाँच घंटे के हिसाब से बालक २० वर्ष का हो तब तक उसकी आँखें ३३,००० बार हत्या और ७२,००० बार अश्लीलता और बलात्कार के दृश्य देख चुकी होंगी ।

यहाँ एक बात गंभीरता से विचार करने योग्य है कि मोहनदास करमचंद गाँधी नाम का एक छोटा बालक एक या दो बार हरिश्चंद्र का नाटक देखकर सत्यवादी बन गया और वही बालक महात्मा गाँधी नाम से आज भी पूजा जा रहा है । हरिश्चंद्र का नाटक जब दिमाग पर इतना असर करता है कि उस व्यक्ति को जिंदगी भर सत्य और अहिंसा का पालन करनेवाला बना दिया तो जो बालक ३३,००० बार हत्या और ७२,००० बार बलात्कार का दृश्य देखेगा वह क्या बनेगा ? आप भले झूठी आशा रखो कि आपका बच्चा इंजीनियर बनेगा, वैज्ञानिक बनेगा, योग्य सज्जन बनेगा, महापुरुष बनेगा परंतु ७२,००० बलात्कार और ३३,००० हत्याओं को देखनेवाला क्या बनेगा ? आप भी इस बात को दुबारा विचारें ।

याद रखें, बच्चे देश की संपत्ति हैं । उन्हें ऐसा वातावरण उपलब्ध करायें जिससे वे भविष्य में आपके लिए व देश के लिए उपयोगी सिद्ध हों । कहीं ऐसा न हो कि आपके बच्चे आपके लिए व समाज के लिए मुसीबत बन जायें । माता-पिता, सरकार व देश के कर्णधारों का यह नैतिक दायित्व है कि वे युवा पीढ़ी को कुप्रवत्तियों से बचाने के लिए उचित कदम उठायें । गलत बातें सोचकर तथा सिनेमा के कुप्रभाव का शिकार होकर युवा पीढ़ी जीते-जी नरक का दुःख भोगने पर विवश हो रही है, क्या यह ठीक है ? ❒

(पृष्ठ १७ का शेष) और विनाश की ओर द्रुतगति से अग्रसर होता है ।

वे मनुष्य की देह में विराजित, मनुष्य के माध्यम से ईश्वर की सर्वोच्च अभिव्यक्ति हैं । उनके माध्यम के बिना, उनके करुणा-कृपाकटाक्ष के बिना, कदम-कदम पर उनकी सहायता के बिना हम अन्य किसी कठोर-से-कठोर प्रयत्न या उपाय से भी परमात्मा को पा नहीं सकते । वास्तव में वे ही परमात्मा हैं । हम उनकी उपासना किये बिना रह नहीं सकते ।

परमात्म-तत्त्व में दृढ़ विश्वास और साकार सद्गुरु में अव्यभिचारिणी भक्ति ही सुख-शांति और दिव्यता का प्रकाश देती है ।

- स्वामी विवेकानंदजी ❒

बापू के साधक सड़कों पर प्रदर्शन करने नहीं उतरे, आखिर क्यों ?

नई दिल्ली (प्रेस की ताकत) : पिछले १ माह से अमदावाद में बापू पर तोहमत लगाने का प्रकरण चल रहा है। संत आसारामजी बापू के पोस्टर फाड़े गये, पोस्टरों को आग लगायी गयी, पोस्टरों को जूतों से पीटा गया, आसारामजी बापू के विरुद्ध नारे लगाये गये । मीडिया बढ़-चढ़कर बापू के विरुद्ध खुलकर बोला। कभी आसारामजी बापू पर तांत्रिक होने के आरोप लगे तो कभी छिंदवाड़ा में मरे बच्चों के माँ-बाप का अपहरण करने का आरोप... परंतु आसारामजी बापू के देश-विदेश में बैठे करोड़ों साधक चुप बैठे रहे, आखिर क्यों ?

उनके चुप बैठने की बात गले नहीं उतरती। यहाँ पर एक बात और विशेष तौर पर वर्णनीय है कि आसारामजी बापू ने यहाँ तक कह दिया कि 'मेरा कोई भी समर्पित शिष्य तांत्रिक प्रयोग नहीं कर सकता । यदि ऐसा साबित हुआ कि मेरे किसी भी समर्पित शिष्य ने तांत्रिक प्रयोग कर अमदावाद गुरुकुल के बच्चों की जान ली है तो मैं खुद फाँसी पर चढ़ने को तैयार हूँ।' आखिर क्यों विश्वास है बापू को अपने समर्पित शिष्यों पर ? इस बारे में संत आसारामजी बापू का कहना है कि 'मैं अपने शिष्यों को धर्म की राह पर, आध्यात्मिकता की राह पर, परमात्मा की राह पर चलना सिखाता हूँ और जो परमात्मा की, धर्म की, आध्यात्मिकता की राह पर एक बार चल पड़ते हैं उन्हें तांत्रिक प्रयोग की आवश्यकता ही नहीं रहती क्योंकि तंत्र तो बहुत ही छोटी चीज है । मेरे साधकों के मन में तो ऐसा विचार भी नहीं आ सकता ।'

दूसरी बात, यहाँ पर यह भी प्रश्न उठता है कि इतना हो-हल्ला होने पर भी बापू के साधक कभी सड़कों पर नहीं उतरे, आखिर क्यों ?

बापू इस बारे में कहते हैं कि 'यह शांति रखने का समय है । पुलिस अपना कार्य कर रही है । अंततः पुलिस सच्चाई सामने ले ही आयेगी ।' ❐

छिंदवाड़ा गुरुकुल में बच्चों की हत्या की साजिश पहले ही तैयार की गयी थी ?

छिंदवाड़ा (विशेष ब्यूरो) : ३ जुलाई २००८ को अमदावाद आश्रम के गुरुकुल में से दो बच्चों का लापता होना और दो दिन बाद उन दोनों बच्चों के शव साबरमती नदी में से मिलने के पाँच दिन बाद मध्यप्रदेश के छिंदवाड़ा के संत आसारामजी बापू के गुरुकुल में एक ऐसे बच्चे का दाखिला करवाया जाता है, जो न तो संत आसारामजी बापू द्वारा दीक्षा-प्राप्त था और न ही उसके परिवार में से किसी भी व्यक्ति ने बापू से दीक्षा ली हुई थी । यहाँ पर प्रश्न यह उठता है कि आखिर ऐसा क्यों करवाया गया ? यह अपने-आपमें बहुत बड़ा प्रश्न है । छिंदवाड़ा पुलिस को इस बात पर कार्य करना ही होगा । हो सकता है कि इस प्रश्न का उत्तर ढूँढ़ते हुए पुलिस संभावित साजिशकर्ताओं तक भी पहुँच जाय ।

यह भी हो सकता है कि ऋतुराज को जान-बूझकर केवल हत्याओं के लिए या उपद्रव मचाने के लिए भेजा गया हो । इस घटना की पुलिस को गहरी जाँच कर, यदि इसके पीछे कोई है तो उसका नाम उजागर करने में देरी नहीं करनी चाहिए ।

('प्रेस की ताकत') ❐

वैवाहिक विज्ञापन

वंशे सदैव भवतां हरिभक्तिररस्तु । आपके कुल में सदैव हरिभक्ति बनी रहे ।

व्याहुत फलवार (गुप्ता) जाति, कश्यप गोत्र, रंग गेहुँआ, २०/५'-३'', शिक्षा- हाई स्कूल, एम.एच.डब्ल्यू., दीक्षा- २००५ बनारस में, रूपसागर जि. बक्सर (बिहार) निवासी युवती हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वर चाहिए। फोन : 09934046122.
(संपर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-1947)

उड़िया खंडायत चबा जाति, सूर्य गोत्र, २८/५'-३'', शिक्षा- आई.टी.आई., डिप्लोमा इन इलेक्ट्रॉनिक्स, दीक्षा- २००६ अमदावाद में, व्यवसाय - आइ.टी.ई.आर.- बी.बी.एस.आर. में लैब असिस्टेंट, ढेनकानल (उड़ीसा) निवासी युवती हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वर चाहिए। फोन : 09438236073.
(संपर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-1945)

लोहार (विश्वकर्मा) जाति, शांडिल्य गोत्र, रंग गेहुँआ, २१/४'-७'', शिक्षा- बी.ए. (इग्नू से), दीक्षा- २००३ अनगुल में, व्यवसाय- टेलरिंग, तालचर जि. अनगुल (उड़ीसा) निवासी युवती हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वर चाहिए । फोन : 09861747752.
(संपर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-1946)

अग्रवाल जाति, गोमल गोत्र, रंग गोरा, ३०/५'-१०'', शिक्षा- हायर सैकेण्डरी, दीक्षा- २००१ अमदावाद में, व्यवसाय- आइसक्रीम फैक्टरी, जयपुर (राज.) निवासी युवक हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वधू चाहिए । फोन : 09351381618.
(संपर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-1948)

ब्राह्मण जाति, गौतम गोत्र, रंग गोरा, २६/५'-६'', शिक्षा- पोस्ट ग्रेजुएट (इंजीनियरिंग), दीक्षा- २००६ बड़ौदा में, व्यवसाय- इंजीनियरिंग (बैंगलोर में कार्यरत), धुमधुमा जि. अनगुल (उड़ीसा) निवासी युवक हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वधू चाहिए। फोन : 09938046079.
(संपर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-1898)

जाति सोनी, रंग गेहुँआ, ३२/५'-२'', शिक्षा - एम.ए., पी.जी.डी.सी.ए., आई.एस.सी., दीक्षा - १९९५ में, व्यवसाय- केन्द्रीय कर्मचारी, (म.प्र.) निवासी तलाकशुदा युवती हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वर चाहिए । फोन : 09785166250.
(संपर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-1949)

चंद्रवंशी जाति, रंग गोरा, २३/५'-१'', शिक्षा- स्नातक (ऑनर्स) अर्थशास्त्र, दीक्षा- २००० अमदावाद में, बांकीपुर जि. पटना (बिहार) निवासी युवती हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वर चाहिए। फोन : 09304260021.
(संपर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-1950)

गुप्ता (वैश्य मोदनवाल) जाति, कश्यप गोत्र, रंग गेहुँआ, २४/५'-३'', शिक्षा- बी.ए., दीक्षा - २००१ इलाहाबाद में, इलाहाबाद (उ.प्र.) निवासी युवती हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य, सजातीय वर चाहिए। फोन : 09335151235.
(संपर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-1951)

गुप्ता (वैश्य मोदनवाल) जाति, कश्यप गोत्र, रंग गेहुँआ, २६/५'-७'', शिक्षा- बी.ए., दीक्षा- २००१ इलाहाबाद में, व्यवसाय - व्यापार, इलाहाबाद (उ.प्र.) निवासी युवक हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य, सजातीय वधू चाहिए। फोन : 09453230826.
(संपर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-1952)

भूमिहार ब्राह्मण जाति, गर्ग गोत्र, रंग गोरा, १८/५'-३'', शिक्षा- बी.ए., बी.एड. में अध्ययनरत, दीक्षा- २००६ अमदावाद में, जनकपुर जि. मेहात्तरी (नेपाल) निवासी युवती हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वर चाहिए । फोन : 09844026583.
(संपर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-1954)

राजपूत जाति, कश्यप गोत्र, रंग साँवला, २४/५'-२'', शिक्षा- एम.बी.ए (अध्ययनरत), दीक्षा- २००४ दिल्ली में, दिल्ली निवासी युवती हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वर चाहिए। फोन : 09990633328.
(संपर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-1956)

खत्री जाति, विल्लस गोत्र, रंग गोरा, ३४/५'-३'', शिक्षा - बी.कॉम., एल.एल.बी., पी.जी.डी.पी.एम., दीक्षा- २००४ हरिद्वार में, व्यवसाय - वकालत, नया नंगल जि. रोपड़ (पंजाब) निवासी युवती हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वर चाहिए । फोन : 01887-222779.
(संपर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-1957)

राजपूत (राणा) जाति, अत्रि गोत्र, रंग गोरा, २६/५-२½'', शिक्षा- एम.ए. (इकनॉमिक्स), बी.एड., दीक्षा- २००३ उज्जैन में, व्यवसाय- अध्यापन (सिगनल ट्रेनिंग सेंटर- प्राइमरी स्कूल), जबलपुर (म.प्र.) निवासी युवती हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वर चाहिए । फोन : 09826522164.
(संपर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-1958)

ठाकुर (क्षत्रिय) जाति, भारद्वाज गोत्र, रंग गोरा, २५/५'-२'', शिक्षा - एम.ए. (पॉलिटिकल साइंस), दीक्षा- २००२ अमदावाद में, देवलगाँव जि. जलगाँव (महा.) निवासी (आंशिक मांगलिक) युवती हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वर चाहिए। फोन : (02580) 264224.
(संपर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-1960)

कुमाऊनी क्षत्रिय जाति, शौनकस्य गोत्र, रंग गेहुँआ, २४/५'-२'', शिक्षा- एम.एससी. (गणित), दीक्षा - १९९९ दिल्ली में, कठधरिया जि. नैनीताल (उत्तराखंड) निवासी युवती हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वर चाहिए । फोन : 09411374432.
(संपर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-1961)

(मैथिल) ब्राह्मण जाति, वत्स गोत्र, रंग गोरा, २४/४'-११'', शिक्षा- बी.ए. (कम्प्यूटर), दीक्षा- २००४ पुणे में, बदलापुर (प.) जि. ठाणे (महा.) निवासी युवती हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वर चाहिए । फोन : 09867792031.
(संपर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-1962)

राजपूत (राठौर) जाति, वसिष्ठ गोत्र, रंग गोरा, २४/५'-२'', शिक्षा- एम.एससी. (रसायन शास्त्र), दीक्षा- २००१ बरेली में, पुणे (महा.) निवासी युवती हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वर चाहिए। फोन : 09421006313.
(संपर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-1963)

मदेसिय हलवाई (वैश्य) जाति, कश्यप गोत्र, रंग गोरा, २४/५-३'', शिक्षा- बी.ए., दीक्षा - २००२ नागपुर में, राजगंगपुर जि. सुंदरगढ़ (उड़ीसा) निवासी युवती हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वर चाहिए । फोन : 06624-222661.
(संपर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-1965)

विभिन्न समितियों द्वारा किये जा रहे दैवी सेवाकार्यों की एक झलक

❖ संकीर्तन यात्राएँ एवं भंडारे ❖

काजली जि. पंचमहाल, व्यारा जि. तापी (गुज.); डोंबिवली जि. थाने, देगलूर जि. नांदेड़, बल्लारपुर जि. चंद्रपुर, मोहाडी जि. भंडारा, कुरखेड़ा जि. गडचिरोली (महा.); सीवान (बिहार); रतननगर जि. चुरु, बयाना जि. भरतपुर, भूपालसागर जि. चित्तौड़गढ़ (राज.); सनावद जि. खरगौन, देवरी जि. सागर, संगोदा (म.प्र.); गोंडा, पीलीभीत, कोंच जि. जालौन, काँठ जि. मुरादाबाद (उ.प्र.) में भव्य संकीर्तन यात्राएँ निकाली गयीं व भंडारे किये गये ।

❖ गरीबों में निःशुल्क अनाज-वितरण ❖

कोरबा (छ.ग.); लठियाणी जि. उना (हि.प्र.) के गरीबों में निःशुल्क अनाज-वितरण किया गया ।

❖ अस्पतालों में फल एवं सत्साहित्य-वितरण ❖

पाली (राज.); सनावद जि. खरगौन, देवरी सागर (म.प्र.) के अस्पतालों में फल एवं सत्साहित्य-वितरण किया गया ।

❖ युवाधन सुरक्षा अभियान ❖

जामनेर जि. जलगाँव, डोंबिवली जि. थाने (महा.); बोकारो (झारखंड); कंदरोडी जि. काँगड़ा (हि.प्र.) के विद्यालयों में 'दिव्य प्रेरणा-प्रकाश' (युवाधन सुरक्षा) पुस्तक का वितरण किया गया ।

❖ जेलों में सेवाकार्य ❖

बालेश्वर (उड़ीसा); रतननगर जि.चुरु (राज.), झाँसी (उ.प्र.) के जेलों में पूज्य बापूजी का विडियो सत्संग दिखाया गया व सत्साहित्य का वितरण किया गया । **कल्याण (महा.)**, के 'बाल कारागृह' में सुसंस्कार-सिंचन कार्यक्रम किया गया ।

❖ निःशुल्क चिकित्सा शिविर ❖

सोलन, लठियाणी जि. उना (हि.प्र.); श्योपुर (म.प्र.) में निःशुल्क चिकित्सा शिविरों का आयोजन किया गया ।

❖ निःशुल्क नोटबुक-वितरण ❖

व्यारा जि. तापी, काजली जि. पंचमहाल (गुज.); मालेगाँव जि. नासिक (महा.); भूपालसागर जि. चित्तौड़गढ़ (राज.) में सुवाक्ययुक्त नोटबुकों का निःशुल्क वितरण किया गया ।

❖ बाल संस्कार केन्द्रों के सेवाकार्य ❖

सुरेरा मण्ढा जि. सीकर (राज.) में बच्चों द्वारा प्रभात फेरी निकाली गयी व सांस्कृतिक कार्यक्रम किये गये । **कटिहार (बिहार)** के बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये व उनमें 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका का वितरण किया गया ।

❖ विविध सेवाकार्य ❖

वराछा जि. सूरत (गुज.) में भगवन्नाम जप यज्ञ व हवन किया गया । **बेल्लारी (कर्नाटक)** के वृद्धाश्रम में फल-वितरण किया गया । **यवतमाल (महा.); रामनगर जि. आणंद (गुज.); पीलीभीत (उ.प्र.)** में महामृत्युंजय मंत्र का सामूहिक जप एवं हवन किया गया । ❐

महापुरुषों का आदर

जिनसे हमें आध्यात्मिक शिक्षा मिलती है, आत्मोन्नति होती है, आत्मशांति मिलती है उनके पास अति नम्रता और भक्ति के साथ जाना चाहिए । संसार में ऐसे उत्कृष्ट पुरुषों की संख्या अति अल्प है और वह भी किन्हीं पवित्र जगहों पर, सर्वत्र नहीं । तथापि संसार ऐसे महापुरुषों से सर्वथा शून्य नहीं है । वे मानव जीवन के सुन्दरतम सुरभियुक्त फूल हैं और अहैतुक असीम दया के सागर हैं ।

ऐसे सत्-तत्त्व का बोध करानेवाले, अहैतुकी कृपा बरसानेवाले आचार्यों के रूप में, गुरुओं के रूप में भगवान स्वयं ही अवनि पर अवतरित होते हैं । यह संसार ज्यों ही ऐसे करुणासिन्धु सद्गुरुओं से बिल्कुल रहित हो जाता है, त्यों ही यह एक भयंकर नरक-कुण्ड बन जाता है **(शेष पृष्ठ १४ पर)**

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया टी.आर.पी. बढ़ाने के चक्कर में क्या नहीं करता !

नई दिल्ली (सचिन गोयल) : आजकल इलेक्ट्रॉनिक मीडिया अपनी टी.आर.पी. बढ़ाने के चक्कर में क्या-क्या नहीं करता ! तथ्यों को कैसे तोड़-मरोड़कर पेश किया जाता है इसका ताजा उदाहरण है - नोएडा में देखने को मिला आरुषि हत्याकांड, जिसमें पुलिस ने आरुषि की हत्या के जुर्म में उसके पिता डॉ. राजेश तलवार को ही गिरफ्तार कर लिया था और हर न्यूज चैनल ने इसे ब्रेकिंग न्यूज बनाकर इस तरह पेश किया कि उसका हत्यारा उसका निर्दयी पिता ही है । उ.प्र. की मुख्यमंत्री सुश्री मायावती ने इसकी जाँच का कार्य देश की सबसे बड़ी जाँच एजेंसी सी.बी.आई. को दिया जिसने डॉ. राजेश को निर्दोष साबित कर दिया और ५० दिन बाद वे जेल से छूटे ।

अब ऐसा ही उदाहरण अमदावाद के संत आसाराम बापू का है, जिनके अमदावाद और छिंदवाड़ा में स्थित गुरुकुलों में मृत बच्चों की खबरों को मीडिया ने इतना उछाला कि जैसे आसाराम बापू तथा आश्रम ही इसके दोषी हों । मीडिया ने बापू की बातों को ऐसे तोड़-मरोड़कर पेश किया जैसे बापू को इन बच्चों की मृत्यु पर दुःख ही न हो । प्रेस की ताकत के पत्रकार ने जब दिल्ली के रजोकरी आश्रम में साधकों से बात की तो पता चला कि कैसे एक टीवी चैनल ने अपने लाइव कवरेज में हेराफेरी की, कैसे उन्होंने बापू का लाइव कवरेज दिखाने के बाद छिंदवाड़ा में मरे बच्चों-रामकृष्ण यादव और वेदांत के माता-पिता का कवरेज दिखाया ही नहीं, जिसमें उन्होंने यह कहा था कि वे अपनी मर्जी से बापू के आश्रम में रह रहे हैं । ज्ञात रहे कि उसी टीवी चैनल ने एक दिन पहले अपने स्टिंग ऑपरेशन में कहा था कि छिंदवाड़ा में मरे बच्चों के माँ-बाप को बापू ने बंधक बनाकर अपने आश्रम में रखा है, जबकि दूसरे सभी चैनल कह रहे थे कि वे अपनी मर्जी से आश्रम में रह रहे हैं । क्या टी.आर.पी. बढ़ाने के चक्कर में ऐसे न्यूज चैनल किसी पर कोई भी मनगढ़ंत आरोप लगा सकते हैं ? जिनका आश्रम को बदनाम करने का काम अभी भी जोर-शोर से चल रहा है, जिनका लेना-देना नहीं है ऐसे लोगों को बहका के झूठी बयानबाजी - 'हमारी जमीन हथिया ली, हमारी जमीन हड़प ली' ऐसा झूठा स्टंट खड़ा किया जा रहा है। स्टंट करके आश्रमों पर आरोपों-पर-आरोप, मनगढ़ंत आरोप लगावाये जा रहे हैं । ऐसा करने से उस चैनल पर से लोगों का विश्वास बढ़ता नहीं बल्कि बिल्कुल ही खत्म हो जाता है, यह शायद चैनलवालों को पता नहीं है । ❐

यदि आपने आसारामजी बापू के विरुद्ध कुछ भी छापा तो मैं आपके ऊपर कोर्ट केस कर दूँगा - अवधेशानंदजी

अम्बाला (प्रेस की ताकत) : 'यदि आपने आसारामजी बापू के विरुद्ध कुछ भी छापा तो मैं आपके ऊपर कोर्ट केस कर दूँगा ।' - ये वचन कहे जूनापीठ के महामंडलेश्वर आचार्य स्वामी अवधेशानंदजी ने । जब पत्रकारों ने आसाराम बापू प्रकरण पर उनके विचार जानने चाहे तो उन्होंने कहा कि 'बहुत हो गया, आज मीडिया बापू को खलनायक सिद्ध करने पर तुला हुआ है । भारतीय संस्कृति पर यह प्रहार कतई बर्दाश्त नहीं होगा ।' उन्होंने पत्रकारों से यह भी कह दिया कि 'यदि आपने आसाराम बापू के विरुद्ध कुछ भी छापा तो मैं आपके ऊपर कोर्ट में केस कर दूँगा ।' सचमुच, यदि ये सभी संत एक हो जायें तो संस्कृति-विरोधी या मीडिया अपने-आप सच्चाई तक पहुँचे बिना कोई बात नहीं कहेगा । ❐